27 सितम्बर 1991

आंबेडकरी जलसा (मराठी)

प्रस्तुति : दलित थियेटर, औरंगाबाद

निर्देशक : प्रकाश त्रिभुवन

कथासार

आरम्भ में सुधारक तमाशा और आंबेडकरी जलसा का भेद स्पष्ट करता है। आंबेडकरी जलसा का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं है बल्कि अशिक्षित दलितों को शिक्षित करना है। प्रारम्भ के सात दृश्य राष्ट्रीय एकात्मता, शिक्षा का महत्त्व, कालाराम मंदिर सत्याग्रह, धर्मांतर विषयों पर आधारित हैं। बाबा साहब के विचार एवं कार्य इनके केन्द्र में हैं।

दूसरा भाग वग है। इसमें राजकुमारी को हासिल करने के लिए पंडित, विक्रम और राजू एक दूसरे से श्रेष्ठ होने का दावा करते हैं। पंडित ब्राह्मण होने से ही श्रेष्ठ होने का दावा करता है लेकिन करनी से चोर साबित होता है। विक्रम चमत्कार का सहारा लेता है और मूर्ख साबित होता है। दलित युवक राजू विद्या, वीरता और बुद्धि के सहारे श्रेष्ठ साबित हो जाता है और राजकुमारी को पा लेता है।

निर्देशकीय वक्तव्य

1990–91 बाबा साहब अंबेडकर जन्मशती वर्ष में महाराष्ट्र की तमाशा शैली को आंबेडकरी जलसा में रूपान्तरित करने का प्रयोग है यह नाटक। तमाशा के गाना (गणेश स्तुति) के स्थान पर बुद्ध, फूले, कबीर और बाबा साहब का वन्दन हैं। इन महात्माओं के दर्शन, विचारधारा और जीवन लक्ष्यों को महिमामण्डित किया है। गवलण (कृष्ण गोपी) को भी बाबा साहब का संदेश दलितों तक पहुँचाने के उद्देश्य से परिवर्तित किया गया है। बटवाणी को हास्य व्यंग्य में बदलकर असामाजिक तत्वों पर प्रहार किया है। वग के माध्यम से शिक्षा का महत्त्व, सत्याग्रह, छुआछूत का अंत आदि को रेखांकित किया गया है। अंबेडकर आन्दोलन में किसी समय लोकप्रिय जलसा शैली को पुनर्जीवित और पुष्ट करने का प्रयास है।

प्रकाश त्रिभुवन

शिक्षा : बी.एससी., बी.जे., बी.डी., एम.ए.एम. फिल। डिप्लोमा इन ड्रामेटिक्स 1978, मराठवाड़ा विश्वविद्यालय से—योग्यता सूचि में प्रथम। कवि, कहानीकार,

नाटककार । 12 नाटकों का निर्देशन । पूना से 'दलित रंगभूमि' मासिक का सम्पादन । सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार राज्यस्तरीय प्रतियोगिता 1983 । सुदर्शन पुरस्कार 1982 । महाराष्ट्र राज्य श्रम विभाग द्वारा 1980 व 1984 में नाट्यलेखन पुरस्कार । फोर्ड फाउण्डेशन, थियेटर एकेडेमी फेलोशिप 1984 ।

मंच पर

शूद्रक : रुस्तम अचलखंब
पुधारी व पंडित : अशोक एन. गायकवाड़
मावशी व राजा : मधुसुदन गायकवाड़
सनातनी, बबण्डीवाला : विजय डोंगरे
राजू : दीपक जवाले
सेठजी : शैलेष बोरकर
शुरसेन : बाजीराव साल्वे
आईस फ्रुट : पंढारीनाथ घांघव
विक्रम : सिद्धार्थ निकलजे
सिपाही : राजू पाटेकर
ताम्रो : विजय घुसाळे
सत्याग्रही : रवीन्द्र कदारे, ईश्वर मोरे, प्रशांत मोले, विद्याधर दलवी, जितेन्द्र पनपाटिल
गवलण, राजकुमारी : नीता जाधव
पत्नी, महिला : विजया सिरोले
राजकुमारी : चित्रा प्रकाश

नेपथ्य में

संगीत : रुस्तम अचलखंब
कोरियोग्राफी : विजया सिरोले
प्रकाश : शेख हमीद
वेशभूषा : जितेन्द्र पनपाटिल
रूपसज्जा : मधुकर कांबले
वाद्यवृंद : दिनेश मोरे, नामदेव बागुल, अनिल हिवाले, बाजीराव साल्वे, अशोक गायकवाड़, प्रभाकर सिरोले, प्रकाश शिरसत